नवप्रभात

सर्वतोभद्र इष्टसिद्धि छत्तीसी

सम्पादक / संकलनकर्त्ता

विविक्तु अजित 'सौंरई'
(गुरूवर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज)
श्री दि. जैन उदासीन आश्रम, इन्दौर

संयोजन

ब्र. प्रदीप शास्त्री 'पीयूष'

प्रकाशक

दिगम्बर जैन वीर विद्या संघ गुजरात

संस्करण प्रतियाँ - ११००
निर्वाण २५२३ लागत - ५४=००

❊ प्राप्ति स्थान ❊

विवित्सु ब्र. अजित जैन
श्री दि. जैन उदासीन श्रावक आश्रम
५८४, महात्मा गांधी मार्ग, तुकोगंज
इन्दौर - ४५२००१ (म.प्र.)
फोन - ५४५७४४, ५४५४२६

श्री दिगम्बर जैन वीर विद्या संघ गुजरात
बी/१२, संभवनाथ अपार्टमेन्ट, बखारिया कालोनी,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद (गुजरात)

श्री दिगम्बर साहित्य प्रकाशन समिति
बरेला, जबलपुर (म.प्र.) ४८३००१
फोन-०७६१-८९४३१, ८९४८३, ८९४८७

श्री दिगम्बर जैन ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र
नारेली अजमेर (राज.)

जैन साहित्य केन्द्र
श्री वर्णी दि. जैन गुरुकुल
पिसनहारी मढ़िया, जबलपुर (म.प्र.)
फोन - ४२२९९१

पं. मुन्नालाल शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य
ललित बुक स्टोर, शाही रोड़,
ललितपुर (उ.प्र.) २८४४०३

श्री महेन्द्र कुमारजी जैन
धर्म पत्नि कल्पना जैन माता श्रीमति सुशीला बाईजी जैन
श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, महावीरपुरा,
ललितपुर (उ.प्र.)

Scanned with CamScanner

प्रथम संप्रक्षालन खण्ड

सर्वतोभद्र प्रातःस्मरण मंगल पाठ

छप्पै छन्द

मङ्गल ऋषभ जिनेंद्र, जैन मग प्रगट दिखावन ।
मङ्गल मुनि गुरु द्वादशांग, बिस्तार बतावन ॥
मङ्गल बाणी जैन सकल, आताप निवारण ।
मङ्गल मारग जैन स्वर्ग, शिवगतिका कारण ॥
श्री सकल संह् मंगलमई, मंगलीक गरु साधु मुनि ।
जिन नाम धाम मंगल मुदा, सदा मोद मंगल निपुनि ॥१॥

मंगल प्रातहि उठे, कछुक आलस रस पागे ।
सिथल बसन अरु केश नैन, घुमत निशि जागे ।
पढ़े मंत्र नवकार, तत्वका भेद बिचारे ।
उदय होय जद[1] भानु, सेज तज पग भू धारे ॥
मल मूत्र आदि त्यागन करे, जल ग्रहे उष्ण अरु शुद्धि कर ॥
निज तन प्रषाल मंगल पढ़े, नहिं पड़े व्यर्थ जल भूमिपर ॥२॥

मंगलीक सामायिकमें समभाव लगावे ।
पंचइंद्री बश करे, चित्तका बेग मिटावे ।
मन बच तन कर शुद्ध, हृदयमें समता धारे ।
कर जिनवरसे प्रेम, सकल आताप निवारे ।
जब सामायिक पूरा करे, शुभ मंगलीक मंगल रटै ।
जिनराज भजन मंगलमई, चित्त दियै पातक कटै ॥३॥

मंगलीक भगवंत, सुमरि आभूषण धारे ।
विविध वर्ण के वस्त्र, पहन काया श्रृंगारे ।
दर्पणमें मुख देख, नैन युग अंजन दीजै ।
यथा शक्ति कर प्रेम, पांच मंगल पढ़ लीजै ॥
दुर्बचन झूठ बोले नहीं, नित पास रहै समता रतन ।
मृदु शब्द ललित भाषै सदा, जुदा न होवै धर्म धन ॥४॥

१. जद = जब

Scanned with CamScanner

मंगल तम भृङ्गार[1], आदिमें मंगल गावै ।
मौन सहित धर प्रीत, जैन चैत्यालै ध्यावै ।
नीची दृष्टि प्रसार, भूमि सब देखत चाले ।
अष्ट द्रव्य सब शुद्धि लिये पहुँचे जैनाले ।
जब लखै ध्वजा जिन चैतकी, अधिक मोद मनमें धरे ।
कर नमस्कार मंगलमई, जय जय जय मुख उच्चरे ॥५॥

जिन मंदिरमें जाय, हर्षयुत मंगल गावै ।
हाथ जोड़ वसु[2] अङ्गनाय मन मोद बढ़ावै ।
आठ द्रव्य कर शुद्ध पूजिये श्री जिनराई ।
मंगलदायक होय मिले, सम्पति सुखदाई ॥
जबलो ठहरे जिन चैतमें, संसार कार्य नहिं चित धरे ।
व्यभिचार, कलह, चोरी, कपट, चुगली निंदा परिहरे ॥६॥

मंगल श्री जिनधर्म ग्रन्थ, शुभ पढ़े पढ़ावै ।
गुरुमुख सुन उपदेश, मोदमय मंगल गावै ।
मंगलीक नवकार जाप कर करै पयाना[3] ।
आवै अपने धाम, करे भोजन विधि नाना ॥
निज द्वार खड़ा देखत रहै, यदि आन मिलें शुभ साधु मुनि ।
मन भक्ति धार आहार दे, यह मंगलीक कारज निपुन ॥७॥

मंगलीक परवार कुटुम्बी जन सब लीजै ।
यथा योग थल बैठ, सकल मिल भोजन कीजै ।
मंगलीक जल पान, करत बहु आनन्द माने ।
बाल युवा अरु वृद्ध, सभी मनमें हर्षाने ॥
लघु करें बड़नको दण्डवत्, मुख आशिष वृद्ध सदा कहैं ।
यह कृत नित हित मंगलमई, मंगलीक मङ्गल लहैं ॥८॥

१. मूलमें श्रृंङ्गार पाठ है, भङ्गार=सोने की झारी/अभिषेकपात्र/लौंग ।,
२. वसु=आठ, ३. पयाना=प्रस्थान/ रवानगी ।

Scanned with CamScanner

रोज़गार शुभ करे, सदा संतोष बढ़ावैं ।
दंभ, लोभ, अन्याय, दगा छल छिद्र मिटावैं ॥
मिथ्या भाषण कटुक वचन, परके दुखदाई ।
मुखसे कभी न कहै, यही है गुण चतुराई ॥
निज सत्यशीलकी घोषणा, फैलावै संसार में ।
यह मंगलदायक कार्य है, प्रचुर लाभ व्यापारमें ॥९॥

मधु, मदरा, सण[1], लवण, चाम, हड्डी कस्तुरी ।
गऊरोचन, गजदन्त, चमर, सीपी[2] नख[3] छुरी[4] ।
सज्जी[5], नील, कर्पुर, लाख, घृत, अन्न, पुराणा ।
लोहा, पीतल, आदि धातु गुड़ घुणा किराणा ।
दधि[6], हींग, मुरब्बा, फूलका, लेन देन नहीं कीजिये ।
नित राजनीति हिय धारके, मंगलीक पद लीजिये ॥१०॥

बहु आरम्भ निवार परिश्रम शक्ति समाना ।
ज्यूँ भोजनमें लवण वस्तुमें नफा उठाना ।
विनय बड़नके साथ, प्रीत सरखा सङ्गनीकी ।
दया करे लघु पुत्र पौत्र, नोकर सबही की ॥
निर्विन्घ शुद्ध आजीविका, मन हर्ष धार करता रहै ।
प्रभु वीतराग मंगलमई, तिन प्रसाद सब सुख लहै ॥११॥

दुःखमें धैर्य धार, दुष्टका तज पतियारा ।
निज बनिता संतोष, त्याग दीजै परदारा ।
गई वस्तुका शोक, मूढ़से प्रीत न कीजै ।
बल बिचार विन युद्ध, निबलको दुःख नहीं दीजै ।
गुरुदेव भूप कवि वैद्य घर, खाली हाथ न जाईये ।
फल विना अमंगल जानके, कर मंगलीक फल लाईये ॥१२॥

---

१. सण=भांग । २. सीपी= शंख । ३. नख=एक गंधद्रव्य/रेशम का बटा हुआ धागा ।
४. छुरी=कलमतराश चाकू । ५. सज्जी=एक प्रकार की क्षारयुक्त मिट्टी । ६. दधि=दहीं

Scanned with CamScanner

याम युगल मध्याह्न समय, आवत सुख माने ।
प्रात: समय अनुसार, फेर सामायिक ठाने ॥
निंदनीक निज कर्म, तिन्हें निंदे बहुवारी ।
इन्द्री दमन कर रटै जाप, आतम हितकारी ।
संसार भ्रमण भयभात है, बारबार जामण मरण ॥
जिनराज चरण सेवा भली, सिद्धि सदन संकट हरण ॥१३॥

यथाशक्ति कंगाल, दीनपर करुणा कीजै ।
भोजन वस्त्र अनेक रोग, लख औषधि दीजै ॥
अभय दान सन्मान, अन्यकी विपत्ति मिटावै ।
क्षमा करे अपराध, दयायुत यश प्रगटावै ॥
दुर्भिक्ष मरी जहाँ संचरे, मन खोल तहां धन व्यय करे ।
यह मंगल कार्य नित कियें, अटल लक्ष्मी संचरे ॥१४॥

चार घड़ी दिन शेष रहे, फिर भोजन पावै ।
प्रात: समय अनुसार, सकल परिवार बुलावै ।
सब मिल भोजन करें, क्षुधा आताप निवारें ।
युग पट[1] शोधा नीर, पान कर समता धारें ॥
नित भक्ष्य अभक्ष्य विचारके, निर्मल भोजन खाईये ।
फिर मंगलीक नवकार जप, मंगल मन हर्षाईये ॥१५॥

संध्या समय निहार, हर्ष जिन मंदिर जावै ।
देखत श्री जगदीश, मोद धर मंगल गावै ।
बारबार जिनराज देवकी थुति उच्चारे ।
रोम रोम उलसाय, अंग आनंद अपारे ॥
त्रैलोकनाथके चरणपर, भाव सहित शिर नायके ।
कर जोर करे इम विनंती, निर्मल भाव बनायके ॥१६॥

जय जय श्री जिनराज, देव जग मंगलकारी ।
भव समुद्रसे पार, उतारो नाव हमारी ।
जीवन है दिन चार, जक्त[2] सुपनेकी माया ।
तुम हो दीन दयालु, नाम सुण सरणे आया ॥
प्रभु लख चौरासी यौनिमें, जामण मरण अनेक विधि ।
मुझ करत फिरत बहु दिन गये, उपजी नाँहि विवेक निधि ॥१७॥

१. पट=वस्त्र । २. जक्त जगत्/संसार ।

Scanned with CamScanner

पूर्व पुण्य प्रताप, गोत्र कुल उत्तम पाया ।
मनुष्य जन्म अरु वीतरागका धर्म सुहाया ।
मिटा तिमिर अज्ञान, हृदयमें हुआ उजाला ।
सत्गुरु भये दयालु, मिटाया गड़बड़ झाला ॥
श्री वीतराग भगवानका, नैनन लखा समवसरण ।
घटमें रवि ज्ञान प्रकाशके, शुद्ध किया अन्तःकरण ॥१८॥

मंगल थुति उच्चार, आरती करत सुहावे ।
झालर ढोल मृदंग, बीन[1] डफ[2] चंग[3] बजावे ।
दुंदुभि भेर मुचंग, झांझ नोबत सहनाई ।
अलगोजा बांसुरि नफीरी[4], ध्वनि सुखदाई ॥
कर जोर मधुर मुस्कान युत, मुलक हर्ष पग धारहीं ।
जगदीश्वरकी मंगलमई, मंगल आरति बारहीं[5] ॥१९॥

मंगल गाय बजाय, आरती कीजै पूरी ।
हाथ जोड़ शिर नाय, खड़ा जिनराज हजूरी ।
मिष्ट बचन युत प्रेम, किसीको लगें न फीके ।
मन्त्र जपै नवकार, सतक ऊपर वसु नीके (१०८) ॥
श्री तीर्थंकर चौबीसके, नाम महा मंगल मई ।
इक्कीस बार पढ़ लीजिये, सेवा बहु विधि हो गई ॥२०॥

मंगल गिर कैलाश ऋषभ, जिन मोक्ष पधारे ।
मंगलीक संमेद शिखर, जिन बीस सिधारे ।
चंपापुर मंदार शैल, मंगल सुखदाई ।
वासुपूज्य भगवान, पंच कल्याणक भाई ॥
गिरनार शिखर मंगलमई, नेमीश्वर शिव तियबरी ।
श्री वर्द्धमान निर्वाण सर, पावापुर आनन्दकरी ॥२१॥

१. बीन=वीणा । २. डफ=कौव्वाली आदि गानेवालों का एक बाजा । ३. चंग=डफ की शकल का एक बाजा/सितार का एक सुर । ४. नफीरी=शहनाई । ५ बारहीं=बरही/उस दिन का उत्सव ।

Scanned with CamScanner

मंगल श्री गजपन्थ, सिद्धवर कूट तारबर ।
शत्रुंजय गिर चूल, द्रोणगिर गढ़ सोनागिर ।
बडवाणी गिरकुंथ, मैंढगिर तुंग उतुंगा ।
कोड़ शिला पावागिर, तट ऐरावित गंगा ॥
मथुरा काकंदी गजपुरी, कौसांबी मिथुला रत्नपुर ।
साबस्थि बिनीता चन्दपुर, भद्दलपुर आनंद प्रचुर ॥२२॥

मंगल चम्पापुरी, कम्पिला मंगल भारी ।
राजगृही शुभ धाम, पंचगिर मंगलकारी ।
शोरीपूर बिख्यात, बटेश्वर पटना पाना ।
कुंडलपुर गुण चैत, सरोवर मंगल माना ।
यह सकल भौम[1] मंगल भरी, वन उपवन नदी तड़ाग[2] स्थल ।
जहां इन्द्रादिक जिनराजके, कल्याणक कीने प्रबल ॥२३॥

इहँ विधि श्री जिनराज, देवगुण मंगल गाके ।
सन्ध्याकी सामायिक कीजै, ध्यान लगाके ।
पूरण होय समाधि, मंत्र नवकार चितारे ।
चार घड़ी निशि गये, सैनकी बिधि बिचारे ॥
पग सय्यापर धरती समय, निज धन्य भाग भयो जानियें ।
जिनराज कृपासे आज दिन, शुभ बिता इम मानियें ॥२४॥

आदि ऋषभ महावीर सहित चौबीस जिनेश्वर
मंगलमय सुख मूल, समझकर नमत सुरेश्वर ॥
मंगलीक यह पाठ, भाव धर पढ़ै पढ़ावैं ।
द्वादश द्वादश अर्द्ध पदी, प्रातहि उठ गावैं ॥
ऋषि[७] अजमुख[४] नारायण[९] शशी[१], संवत् (१९४७) ज्येष्ठ धवल वरण ।
कवि 'जीयालाल' भृगु पंचमी, रचो पाठ मंगल करण ॥२५॥

इति श्री सर्वतोभद्र प्रातःस्मरण मंगल पाठ सम्पूर्णम् ।

* * *

१. भौम=भूमि-सम्बन्धी । तड़ाग=तालाब/सरोवर ।

Scanned with CamScanner

४. दर्शनार्थ मार्ग में वन्दना छत्तीसी

आदि तीर्थंकर प्रथम ही बन्दू, वर्धमान गुण गाऊं जी।
अजित आदि पारस जिनवर लौं, बीस दोय मन लाऊं जी ॥ १ ॥

सीमन्धर आदिक तीर्थंकर, विदेह क्षेत्र के माँही जी।
सकल तीर्थंकर गुण गण गाऊँ, विरहमान मन लाऊँ जी ॥ २ ॥

भूत भविष्य वर्तमानकी, तीस चौबीस बन्दू जी।
जिन प्रतिमा जिन मन्दिर बन्दू, जैन धर्म को बन्दू जी ॥ ३ ॥

गुरु गौतम शारद मन लाऊँ, तीरथ सब चित्त ध्याऊँ जी।
पंच परम पद नित ही सुमरूँ, रत्नत्रय मन लाऊँ जी ॥ ४ ॥

जम्बूद्वीप मनोहर सोहे, लख योजन विस्तारा जी।
मध्य सुदर्शन मेरु विराज़े, विजय अचल तहाँ मानु जी ॥ ५ ॥

मन्दर विद्युन्माली सोहे, अस्सी मन्दिर बन्दूँ जी।
कोस बत्तीस कैलास विराजे, ऋषभ देव निर्माणु जी ॥ ६ ॥

शिखर देश के मध्य विराजे सम्मेदाचल बन्दूँ जी।
कर्म काट निर्वाण पधारे, बीस जिनेश्वर बन्दूँ जी ॥ ७ ॥

वासुपूज्य चम्पापुर बन्दूँ, महावीर पावापुर जी।
नेमिनाथ गिरनारी बन्दूँ, कोड़ि बहत्तर मुनिवर जी ॥ ८ ॥

मांगीतुङ्गी शिखर विराजे, मुनिवर कोड़ि निन्यानवे जी।
गजपन्था शत्रुञ्जय बन्दूँ, कोटि शिला तारंगा जी ॥ ९ ॥

मुक्तागिरि सोनागिर बन्दूँ, पावागिरि पुनि बन्दूँ जी।
कुन्थुनाथ आबूगिरि बन्दूँ चूलगिरि पुनि बन्दूँ जी ॥ १० ॥

अन्तरिक्ष पारस मन ध्याऊँ, शान्तिनाथ श्रीरामगिरि।
रेवानदी चेलना बन्दूँ, द्रोणागिरि पुनि बन्दूँ जी ॥ ११ ॥

कुलभूषण देशभूषण बन्दूँ, जम्बू स्वामी बन्दूँ जी।
जहाँ - जहाँ मुक्ति गये जिनेश्वर, सिद्धक्षेत्र सब बन्दूँ जी ॥ १२ ॥

Scanned with CamScanner

जम्बू वृक्ष शाल्मली बन्दूँ, चैत्यवृक्ष सब बन्दूँ जी।
गिरिविजयार्ध कुलाचार बन्दूँ, काञ्चन गिरि सब बन्दूँ जी ॥ १३ ॥

वक्षारगिरि इष्वाकार बन्दूँ, गजपन्थागिरि बन्दूँ जी।
रुचकगिरि कुण्डल गिरि बन्दूँ, मान्य खेट गिरि बन्दूँ जी ॥ १४ ॥

अञ्जन दधि रतिकर गिरि बन्दूँ, नन्दीश्वर जिन बन्दूँ जी।
भूतानागत वर्तमान सब, चैत्य-चैत्यालय बन्दूँ जी ॥ १५ ॥

अकृत्रिम चैत्यालय बन्दूँ, मध्यलोक के माँहि जी।
जहाँ जहाँ जिन बिम्ब विराजे, बन्दूँ मन वच काया जी ॥ १६ ॥

ऋषभ देव अरु गौतम बन्दूँ, सुधर्म स्वामी बन्दूँ जी ।
नैनागिरि खजुराहो बन्दूँ, गोपाचल जिन बन्दूँ जी ॥ १७ ॥

अन्देश्वर के पारस बन्दूँ, चांदनपुर महावीरा जी।
बड़वानी आदीश्वर बन्दूँ , बन्दूँ ऊन सिद्धवर जी ॥ १८ ॥

राजगिरि मुनिसुव्रत बन्दूँ, सेठ सुदर्शन पटना जी।
कर्म काट निर्वाण पधारे, अघहारी तिन बन्दूँ जी ॥ १९ ॥

मक्सी पार्श्व जिनेश्वर बन्दूँ, कुण्डलपुर के श्रीधर जी।
खण्डगिरि उदयागिरि बन्दूँ, पंचपहाडी बन्दूँ जी ॥ २० ॥

अतिशय क्षेत्र पपौरा बन्दूँ, विघनहरण कचनेरा जी।
विन्ध्यगिरि बाहुबली बन्दूँ, चन्द्रगिरि जिन बन्दूँ जी ॥ २१ ॥

धर्मपुरी विपुलाचन बन्दूँ, चन्द्रपुरी अरु काशी जी।
कौशाम्वी काकन्दीपुर अरु, हस्तिनागपुर बन्दूँ जी ॥ २२ ॥

सिंहपुरी श्रावस्ती बन्दूँ, और अयोध्या बन्दूँ जी।
जन्म पाये केवलपद पायो, भविजन को सम्बोध्या जी ॥ २३ ॥

सौरीपुर बटेश्वर बन्दूँ, द्वारावति पुनि बन्दूँ जी।
पोदनपुर बाहुवली बन्दूँ, पंच कल्याणक बन्दूँ जी ॥ २४ ॥

अहमेन्द्र सब कल्पवासी अरु, ज्योतिष पंच प्रकारा जी।
भवनवासि व्यन्तर के बन्दूँ, चैत्यालय भवहारा जी ॥ २५ ॥

पूरब दक्षिण पश्चिम उत्तर, दिशा विदिशा माँहि जी।
तीन लोक चैत्यालय बन्दूँ, मन वच तन सिर नाईजी ॥ २६ ॥

आठ कोड़ि लख छप्पन उपर, सहस सत्तावन बन्दूँ जी।
चार शतक इक्यासी मन्दिर; मन वच तन कर बन्दूँ जी ॥ २७ ॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप, मोक्षमार्ग ये राखी जी।
जैन धर्म जिनवाणी बन्दूँ, वीतराग जो भाखी जी ॥ २८ ॥

महाधवल जयधवल अरु, समयसार को बन्दूँ जी।
ज्ञानार्णव पंचस्तिकाय त्रैलोक्यसार को बन्दूँ जी ॥ २९ ॥

क्रियाकोश गोमट्टसार द्वय, मोक्षशास्त्र को बन्दूँ जी।
मूलाचार श्रावकाचार अरु, द्रव्यसंग्रह बन्दूँ जी ॥ ३० ॥

चरित पुराण कथा ग्रन्थन को, षटप्राभृत को बन्दूँ जी।
गणधर रचित सर्व श्रुतरूपी, द्वादशांगको बन्दूँ जी ॥ ३१ ॥

गौतम, सुधर्म, जम्बुस्वामी श्री विष्णुनन्दि को बन्दूँ जी ॥
अपराजित गोवर्धन बन्दूँ, भद्रबाहुको बन्दूँ जी ॥ ३२ ॥

माघनन्दि श्री पुष्पदन्त अरु, भूतवली को बन्दूँ जी।
कुन्दकुन्द श्री पूज्यपाद जिन उमास्वामी को बन्दूँ जी ॥ ३३ ॥

अन्तर बाह्य परिग्रह तज कर जो तप में लवलीना जी।
ऐसे साधु दिगम्बर सबको, नमस्कार हम कीनां जी ॥ ३४ ॥

अर्हत सिद्धाचार्योपाध्याय, साधु सकल पद बन्दूँ जी।
सुमरन करत भवोदधि तरिया, मेट कर्म का फन्दा जी ॥ ३५ ॥

नगर 'मारो' से जकडी कीनी, सकल भविक मन भावे जी।
दास 'विहीर' विनती गावे, नाम लेत सुखपावे जी ॥ ३६ ॥

मन वच सुने पढ़े चित लावे, तीरथ को फलपावे जी।
भूल चूक शुद्धि कर बुधजन, सबसे क्षमा करावे जी ॥

इति श्री दर्शनार्थ मार्ग में वन्दना छत्तीसी सम्पूर्णम्

* * *

Scanned with CamScanner

६. श्रीतीर्थ-वन्दना छत्तीसी

आदि जिनेश्वर प्रतिमा वन्दूं, वर्द्धमान गुण गाऊंजी ।
सकल तीर्थंकर मुनिगण मंडित, अतीत अनागत ध्याऊंजी ॥ १ ॥

गुरु गौतम शारद मन लाऊ, तीर्थ सकल गुण गाऊंजी ।
पंच परमपद नित ही समरुं, रत्नत्रय मन लाऊंजी ॥ २ ॥

जम्बूद्वीप मनोहर सोहे, लक्ष योजन परमाणुजी ।
मध्य सुदर्शन मेरु विराजे, विजय अचल तहां मानुजी ॥ ३ ॥

मंदिर विद्युन्माली सोहे, अस्सी चैत्यालय वन्दू जी ।
कोस बत्तीस कैलाश विराजे, रिषभदेव निर्वाणोजी ॥ ४ ॥

शिखर देशके मध्य विराजे, सम्मेदाचल वन्दूंजी ।
कर्म काट निर्वाण पहुंचे, बीस जिनेश्वर वन्दूजी ॥ ५ ॥

चम्पापुर वासुपूज्य वन्दूं पावापुर वर्धमानोजी ।
नेमिनाथ गिरनारी वन्दू, यादव कुलके भानूजी ॥ ६ ॥

कोड़ी बहत्तर मुनीश्वर वन्दू, सातसे फणीधर वन्दूंजी ।
मांगीतुङ्गी शिखर विराजे, मुनिश्वर कोड निन्यांणुजी ॥ ७ ॥

गजपंथा शत्रुञ्जय वन्दू, कोटि शिला तारंगाजी ।
मुक्तागिरि सोनागिरि वन्दू, पावागढ़ पुनि वन्दूंजी ॥ ८ ॥

आबूगढ़ चैत्यालय वन्दू, अतिशय तीर्थ बडवानी जी
अन्तरीक्ष पारस मन वन्दूं, रामटेक शांतिनाथजी ॥ ९ ॥

रेवानदी सिद्ध अनंता, सिद्धक्षेत्र मुनि वन्दू जी ।
रिषभदेव अरु गोमट वन्दूं, मणिकस्वामी वन्दूंजी ॥ १० ॥

पाली शांति जिनेश्वर वन्दूं, गोपाचल जिनराजा जी ।
आबूगढ़ श्री पारस वन्दूं, सारङ्गपुर महावीराजी ॥ ११ ॥

जामनेर आदिश्वर वन्दूं, चिन्तामणी उज्जैनीजी ।
रिषभदेव बावन गज वन्दू, राजगिरी गढ़ गाऊंजी ॥ १२ ॥

तेरा महावीरस्वामी वन्दूं, समवशरण जिन ठानू जी ।
उदयगिरि चैत्यालय वन्दूं, सोमपुरी जिनराजा जी ॥ १३ ॥

अङ्कलेश्वर ऐरोड़ा वन्दूं, विघ्नहरण कचनेरा जी ।
जलददेव श्री गोमट वन्दूं, सवा पांचसौ दण्डी जी ॥ १४ ॥

नन्दीश्वर कुन्थलगिरि वन्दूं, जन्मकल्याणक काशीसी ।
सिंहपुरी पेटेश्वर वन्दूं, द्वारावती पुनि वन्दूं जी ॥ १५ ॥

कल्पवासी चैत्यालय वन्दूं, व्यंतरवासी पुनि वन्दूं जी ।
भवनवासी चैत्यालय वन्दूं, ज्योतिषवासी पुनि वन्दू जी ॥ १६ ॥

पातालवासी चैत्यालय वन्दूं, वन्दू पन्च प्रकारो जी ।
बीस व्यंतर चैत्यालय वन्दूं, वन्दूं तीस चौबीसी जी ॥ १७ ॥

तीनलोक चैत्यालय वन्दूं, अधो मध्य उर्ध्वलोक पुनि वन्दूं जी ।
कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूं जी ॥ १८ ॥

चार दिशा चैत्यालय वन्दूं, पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण पुनि वन्दूं जी ।
आठ दिशा चैत्यालय वन्दूं, दिशा विदिशा पुनि वन्दूं जी ॥ १९ ॥

दोय दिशा चैत्यालय वन्दूं, भोगभूमि कर्मभूमि पुनि वन्दूं जी ।
पन्द्राभोगभूमि चैत्यालय वन्दूं, भरत ऐरावत विदेहक्षेत्र पुनि वन्दूं जी ॥ २० ॥

जम्बूद्वीप चैत्यालय वन्दूं,अर्ध दोय द्वीप पुनि वन्दूं जी ।
एक द्वीप चैत्यालय वन्दूं, तीन द्वीप पुनि वन्दूं जी ॥ २१ ॥

तेरह चैत्यालय वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूं जी ।
नन्दीश्वर बावन चैत्यालय वन्दू, मन वच काय पुनि वन्दूं जी ॥ २२ ॥

हरेक दिशा चैत्यालय तेरह, भाव सहित पुनि वन्दूं जी
अन्जनगिरि चैत्यालय वन्दूं, दधिमुख पुनि वन्दूं जी ॥ २३ ॥

रतिकर पर्वत चैत्यालय वन्दूं, मन वच काय पुनि वन्दूं जी ।
नन्दीश्वर बावन चैत्यालय वन्दूं, चतुर्मुख चार दिशा पुनि वन्दूं जी ॥ २४ ॥

हर एक मन्दिर , एकसौ आठ प्रतिमा भाव सहित पुनि वन्दूं जी ।
हर प्रतिमा पांचसौ धनुष की, रत्नमयी पुनि वन्दूं जी ॥ २५ ॥

Scanned with CamScanner

अरहंत सिद्ध प्रतिमा वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूं जी ।
तीन कटनी पर प्रतिमा वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूं जी ॥ २६ ॥

चार अंगुल अधर प्रतिमा वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूंजी ।
एक सिद्ध में अनन्त सिद्ध वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूंजी ॥२७॥

कुण्डलादिक क्षेत्र वन्दूं, मन वच काय पुनि वन्दूं जी ।
रतिकर गिरि क्षेत्र वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूं जी ॥२८॥

जम्बूद्वीपमें एकसौ सत्तर क्षेत्र वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूं जी ।
मध्यलोक में ४५८ जिन मन्दिर वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूंजी ॥२९॥

गङ्गा सिंधु उत्तर दिशासे दक्षिण दिशा तक दोय तट ।
५६००० है ५६००० जिन मन्दिर वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूं जी ॥ ३० ॥

गंगा सिंधु नदी पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा तक २८००० हैं
२८००० जिन मन्दिर वन्दूं, भाव सहित पुनि वन्दूंजी ॥ ३१ ॥

तारा[१] तम्बोलन जात्रा करता, सरोवर १२ कोस ता मध्यें, शांतिनाथ जी
प्रतिमा ६ हाथ चौड़ी, १० हाथ ऊंची ते भाव सहित पुनि वन्दूंजी ॥३२॥

तारा तम्बोल में ७०० जिन मन्दिर मैं २४७६४ प्रतिमा जी
धवला महाधवला शास्त्र विराजे, भाव सहित पुनि वन्दूंजी ॥ ३३ ॥

तारा तम्बोल में यात्रा करता, मांगी तुङ्गी पर्वत पर प्रतिमा
४८ हाथ ऊँची २८ हाथ चौड़ी भाव सहित पुनि वन्दूं जी ॥ ३४ ॥

कोड़ा कोडि मुनिश्वर वन्दूं, मांगीतुङ्गी शिखर पुनि वन्दूजी ॥
अनन्तानन्त मुनिश्वर वन्दूं, सम्मेदशिखर पुनि वन्दूजी ॥ ३५ ॥

नरनारी जे विनती गावे, मन वांछित फल पावेजी ।
'सकलकीर्ति' ने गण गुण गायो, दास 'बिहारी' विनती गायो ॥ ३६ ॥

सकल तीर्थनी करूं वन्दना, मोक्षजु कारण पाऊंजी ।
मन वचन काय त्रियोग लगाऊँ, भाव सहित पुनि बन्दूं जी ॥

*** इति श्रीतीर्थ वन्दना छत्तीसी संपूर्णम् ***

१: तारा=नदी-विशेष/तारंगास्थान

Scanned with CamScanner